[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3465

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सिने संगीत में शास्त्रीय संगीत की प्रासंगिकता

डॉ. बी. वर्षा
सहा. प्राध्यापक (गायन) संगीत विभाग
शा. कन्या महाविद्यालय, रतलाम

भारतीय विद्वानों ने संगीत को ईश्वरीय वाणी माना है। यह समस्त सृष्टि, नाद के अधीन है तथा नाद को ब्रह्म कहा गया है, क्योंकि नाद सर्वत्र व्याप्त है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही नादमय है। नाद से ब्रह्म, ब्रह्म से शब्द, शब्द से वाक्य तथा वाक्य से गीत बनता है, अतः यह कहा जा सकता है कि नाद संगीत का प्राण है।

हर्ष, उल्लास, उमंग, यह व्यक्ति के जीवन का श्रृंगार है, जब व्यक्ति सामाजिक बंधनों अथवा समस्याओं में उलझकर कमजोर होने लगता है, तब उसमें पुनः शक्ति तथा जोश भरने का कार्य जिन कलाओं में है, उन्हें ललित कलायें कहा जाता है और ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोच्च माना जाता है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि मनुष्य तथा संगीत का अभिन्न सम्बन्ध है।

भारतीय संस्कृति सदियों से समृद्ध रही है और कई युग–पुरूषों ने विभिन्न माध्यमों से मानव मन के हृदय पटल पर अमिट छाप छोड़ी है और इन्हीं माध्यमों में से एक सशक्त माध्यम है – संगीत। मानव मन को प्रभावित करने में फिल्में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और फिल्मों के माध्यम से संगीत अनगिनत लोगों तक पहुँचता है। फिल्म संगीत ने भाास्त्रीय संगीत को सार्वजनिक स्वरूप दिया। फिल्मी माध्यम से भाास्त्रीय संगीत को कम से कम समय में अधिक से अधिक सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है और इसीलिये जन साधारण आसानी से इसका रसास्वादन कर सकता है।

भारतीय फिल्मों में संगीत का प्रयोग दो प्रकार से किया जा सकता है – 1. जगह भरने के लिये 2, कथानक को उभारने के लिये पृष्ठभूमि संगीत के रूप में। एक समय था जब फिल्मों में शास्त्रीय संगीत का ही प्रयोग किया जाता था, जिनमें फिल्म 'देख कबीरा रोया' का गीत "मेरी बिना (वीणा) तुम बिन रोये''; राग अहीर भैरव, ''मोहे पनघट पे नंदलाल'' फिल्म 'मुगल–ए–आज़म'; राग गारा, ''बदली–बदली दुनिया है मेरी'' फिल्म 'संगीत सम्राट तानसेन'; राग झिंझोटी, ''इंसान बनो'' फिल्म 'बैजू बावरा'; राग तोड़ी, ''मैं बन की चिड़िया'' फिल्म 'अछूत कन्या'; राग मिश्र पीलू जैसे कई अनगिनत फिल्मी गीतों के उदाहरण दिये जा सकते हैं। इसी प्रकार शास्त्रीय रागों के साथ–साथ शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त होने वाली तालों का भी प्रयोग फिल्म संगीत में दिखाई देता है। उदाहरण के तौर पर कुछ गीतों के नाम लिये जा सकते हैं –

ताल कहरवा – लागा चुनरी में दाग, छुपाऊँ कैसे
ताल दादरा – ठाड़े रहियो, ओ बांके यार रे
ताल रूपक – चुपके–चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
ताल एकताल – पवन दीवानी न मानी
ताल झपताल – आँसू भरी है ये जीवन की राहें

यही नहीं ताल के साथ–साथ सरगम तथा अलंकारों का भी प्रयोग फिल्मी गीतों में किया जाता है। फिल्म 'चुपके–चुपके' का गीत ''सारेगामा सारेगामा ममगरेसा'' अथवा फिल्म 'अभिनेत्री' का गीत ''सारेगम प प प'' को कौन भूल सकता है। फिल्म संगीत लय प्रधान होने के कारण मानव मन को भीघ्र प्रभावित करता है। फिल्म संगीत की पूरी सफलता उसकी लय एवं वाद्यों के प्रयोग पर निर्भर करती है, क्योंकि वाद्यों का प्रयोग केवल गीतों की सुंदरता को ही नहीं बढ़ाता वरन् कथानक के भावों को स्पश्ट करने में भी मददगार होता है। आर्केस्ट्रा के अभाव में फिल्म संगीत अपना आधा सौन्दर्य खो देता है।

अर्थात् गीतों से उपर्युक्त तत्वों को हटा दिया जाए तो ये पूर्णतः नीरस हो जाऐंगे। निश्चित ही शास्त्रीय संगीत के विभिन्न आयामों का प्रयोग हमारे ऊपर अपना अमिट प्रभाव छोड़ता है। 'बैजू बावरा', 'बसंत बहार', 'झनक–झनक पायल बाजे' जैसे शास्त्रीय संगीत से युक्त फिल्मी गीतों का बहुत अधिक प्रभाव दर्शकों के मन पर पड़ा, किन्तु विकास के परिवर्तन के साथ–साथ जिस प्रकार फिल्में प्रगति की ओर बढ़ती गई वैसे ही संगीत में भी परिवर्तन आता गया, जिसकी परिणीति यह हुई कि फिल्म संगीत में नये–नये प्रयोग होने लगे। उसमें पाश्चात्य संगीत 'रॉक' का समावेश किया जाने लगा, जिसका

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

जनमानस पर व्यापक प्रभाव दिखाई देने लगा। यह परिवर्तन विकास के लिये तो आवश्यक था, किन्तु शास्त्रीय संगीत के लिये चुनौती भरा भी था। धीरे–धीरे फिल्म संगीत से शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता का ह्रास होने लगा; उसका श्रोता वर्ग सिमटता चला गया, किन्तु फिर भी संगीतकारों ने फिल्म संगीत में संगीत की विभिन्न भौलियों जैसे – लोकसंगीत, गज़ल, कव्वाली का समावेश कर लोकप्रियता को बटोरा। इसप्रकार सिने संगीत में लगभग संगीत की सभी शैलियों को पनपने का अवसर मिला। आज आवश्यकता इस बात की है कि जन–जन तक शास्त्रीय संगीत को पहुँचाने के लिए एक वातावरण बनाया जाए, जिससे भाास्त्रीय संगीत की ताज़गी फिल्म संगीत में बनी रहे। भाास्त्रीय संगीत विशुद्ध रूप से हमारी सांस्कृतिक विरासत का अनमोल रत्न है। यह संगीत इतना सम्पन्न और विस्तृत है कि संसार के प्रत्येक क्षेत्र का संगीत, हमारे भारतीय संगीत का ऋणी है। फिल्मों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने हेतु न केवल सिनेमा संसार से सम्बन्धित व्यक्ति वरन् व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयासों से मिलकर प्रयत्न करना होगा, जिससे आने वाली पीढ़ी इस धरोहर से भली–भाँति परिचित हो सके।